International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

भारतीय युद्धों में मीडिया की भूमिका

अम्बिका त्रिपाठी, शोध छात्रा, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
प्रो॰ हर्ष कुमार सिन्हा, आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोध सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय युद्धों में जनसंचार माध्यम की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। समय के साथ इन जनसंचार माध्यम का स्वरूप बदलता रहा और अब ये सर्वव्यापक हो गए हैं। पाकिस्तान और चीन के साथ 1947, 1962, 1965 और 1971 में लड़े गए युद्ध के दौरान प्रसारण कर्ता के रूप में ऑल इंडिया रेडियो ने अपने सैनिकों के मनोबल को बनाए रखने के साथ-साथ लोगों को सीमा पर चल रही गतिविधियों से अवगत कराने का कार्य बड़ी ही कुशलता से किया। सन् 1999 में कारगिल युद्ध भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तानी घुसपैठियों के साथ लड़ा गया था। कारगिल युद्ध की सारी खबरें एवं युद्ध की आंखों देखी दृश्य टेलीविजन पर सीधे प्रसारित हुई थी। यह भारत द्वारा लड़ा जा रहा ऐसा युद्ध था जिसका सीधा प्रसारण पहली बार पूरा विश्व टेलीविजन पर देखा। वास्तव में, यह दक्षिण एशियाई क्षेत्र का पहला 'लाइव' युद्ध था। यह युद्ध ऐसे समय में हुआ, जब भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शुरुआत हुई थी। इसने इस युद्ध को पूरे देश में सीधा प्रसारण करने में सक्षम बनाया। साथ ही, भारतीय मीडिया द्वारा बनाई गई सकारात्मक छवि ने भारत देश को वैश्विक स्तर पर कूटनीतिक पहचान दिलाने में मदद की। इन युद्धों में मीडिया ने नैतिकता और उत्तरदायित्व की परिधि में रहकर कार्य किया और युद्ध के परिणाम को प्रभावित किया।

प्रस्तावना

भारत में सभ्यता के विकास साथ - साथ मीडिया के क्षेत्र में भी बहुत महत्त्वपूर्ण और आश्चर्यजनक विकास हुआ है। निःसंदेह मीडिया मनुष्य, समाज, सभ्यता और राष्ट्र के विकास का सूत्रधार है। आज इस सूचना के युग में सब कुछ सूचनाओं के निरंतर प्रेषण पर ही सारा संसार टीका है। सभी कालखंडों में आम सूचनाओं के साथ युद्ध और संघर्ष भी मीडिया के प्रधान विषय रहे हैं। जब भी कोई स्थिति उत्पन्न होती है, तो पूरा देश पत्रकारों को यह जानने के लिए देखता है, कि क्या हो रहा है। संकट और युद्ध के समय यह भूमिका और भी प्रमुख हो जाती है। युद्ध रिपोर्टिंग बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। मीडिया के लोग जान जोखिम में डालकर युद्ध एवं संघर्ष की सूचनाएं आमजन तक पहुचाते हैं, कभी कभी इस कार्य मे जान भी गंवाना पड़ता है। युद्ध के मोर्चे से खबरें कभी भी सुखद नहीं होती हैं और टीवी स्क्रीन एवं अखबारों के पन्नों पर छपी हुई भयानक तस्वीरें हमें बुरी तरह प्रभावित करती हैं। मीडिया कवरेज इन युद्धों की वास्तविक घटनाओं को सामने लाता है। यह युद्ध के असली चेहरे को उजागर करने में मदद करता है। मीडिया युद्ध अपराधों और युद्ध के कारण होने वाले अन्य आक्रोशों को सुर्खियों में लाने में भी मदद करता है। भारत में स्वतंत्रता के बाद भारत पाकिस्तान, व भारत चीन युद्धों के परिणामस्वरूप हजारों नागरिक और सैनिक हताहत हुए हैं। इन संघर्षों को मीडिया ने कवर किया और हमें उसकी जानकारी उपलब्ध कराई ।भारत अपनी स्वतंत्रता के शुरुआती दौर से ही युद्धों का शिकार रहा है। भारत को स्वतंत्रता के प्रारंभिक चरणों के दौरान पाकिस्तान और चीन के साथ परिणामी युद्धों का सामना करना पड़ा। इससे न केवल भारत की वृद्धि बाधित हुई बल्कि क्षेत्रीय अस्थिरता की स्थिति भी उत्पन्न हुई। पाकिस्तान और चीन के साथ 1947, 1962, 1965 और 1971 में लड़े गए युद्ध के दौरान प्रसारण कर्ता के रूप में ऑल इंडिया रेडियो ने अपने सैनिकों के मनोबल को बनाए रखने के साथ-साथ लोगों को सीमा पर चल रही गतिविधियों से अवगत कराने का कार्य बड़ी ही कुशलता से किया।

बीज-शब्द - मीडिया] युद्ध] पाकिस्तान] चीन] प्रसारण] सीमा] प्रभाव] सूचना।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद औपनिवेशिक काल की विरासत ने भारत के सीमा पर स्थित देशों के साथ सीमा - विवाद व संघर्ष के उद्भव एवं विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रमुख रूप से यह संघर्ष व युद्ध

भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के साथ रहा है। इन युद्धों में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की मुख्य भूमिका रही है। इस काल खण्ड में मीडिया ने स्वतंत्र एवं निष्पक्ष सूचनाओं को आम जन तक पहुंचाकर लोगों को सतर्क और जागरूक किया।

भारत-पाक युद्ध, 1947- 48

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सीमा विवाद एवं कश्मीर समस्या को लेकर भारत - पाकिस्तान में संघर्ष व युद्ध की स्थिति की पुनरावृत्ति रही है। हालाँकि भारत कई देशों के साथ अपनी सीमा साझा करता है, लेकिन प्रमुख रूप से भारतीय सेना के साथ टकराव में पाकिस्तान और चीन है। आजादी के बाद भारत द्वारा लड़े गए सभी युद्ध भारत के इन दो पड़ोसियों के साथ हैं। विभाजन के बाद, डोगरा राजवंश के महाराजा हरि सिंह, जो उस समय कश्मीर राज्य के शासक थे, ने एक स्वतंत्र राज्य के रूप में रहना चुना। हालांकि, पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को देश का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए तनाव और दबाव बनाया गया था। इस दावे के लिए पाकिस्तान द्वारा कारण सामने रखा गया था, कि कश्मीर की बहुसंख्यक आबादी मुस्लिम थी, और वह भारत सरकार से खुश नहीं थी। कश्मीर के क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए पाकिस्तान के लगातार कदमों के बाद, डोगरा के महाराजा को 2 अक्टूबर, 1948 को भारत में शामिल होने के लिए कोई विकल्प नहीं बचा था। कश्मीर घाटी को आधिकारिक तौर पर भारत सरकार को हस्तांतरित कर दिया गया था। हालाँकि, हरि सिंह ने कुछ शर्तें रखीं। इस प्रकार, राजा की भावनाओं का सम्मान करने के लिए, प्रधानमंत्री नेहरू ने विशेष लेख पारित किए, जिसके अनुसार कश्मीर को भारत के राज्य के रूप में घोषित किया गया था, लेकिन एक स्वायत्त स्थिति के साथ। इससे आहत होकर पाकिस्तान ने भारत पर युद्ध की घोषणा कर दी जो थोड़े समय के लिए जारी रही। यह स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा लड़े गए सभी युद्धों में से पहला था। हालाँकि, संयुक्त राष्ट्र द्वारा खींची गई भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम रेखा की स्थापना के साथ युद्ध समाप्त हो गया । 1947- 48 के इस भारत-पाक युद्ध में जनसंचार साधनों का प्रयोग किया गया। जम्मू में हुए सामंत शाही विद्रोह को पाकिस्तान ने मुसलमान जनता का हिंदू राजा के विरुद्ध अभियान का रूप देकर विभिन्न जनसंचार माध्यमों से उसे प्रचारित-प्रसारित करके कश्मीर की जनता का रहनुमा बनने का प्रयास करते हुए सैनिक कार्रवाइयों को अंजाम दिया। इस युद्ध में जनसंचार माध्यम के रूप में प्रिंट मीडिया का प्रयोग किया गया था। प्रत्युत्तर भारत विभिन्न जनसंचार माध्यमों का सफल प्रयोग करके तटस्थ राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त करने में सफल रहा । इस युद्ध में मीडिया परिदृश्य आज से बहुत अलग था। सीमित तकनीकी संसाधन थे, और युद्ध का कवरेज समकालीन संघर्षों जितना व्यापक या तत्काल नही थी। सामाचार पत्र, रेडियो और न्यूजरील जनता तक सूचना प्रसारित करने के प्राथमिक थे। मीडिया का उपयोग युद्ध रिपोर्टिंग के लिए किया जाता था, लेकिन यह अक्सर सरकारी प्रसार से प्रभावित होता था। कवरेज में सैन्य सफलताओं पर भी प्रकाश डाला गया।

भारत - चीन युद्ध, 1962

भारत - चीन युद्ध, 1962 इस युद्ध के बीज तब बोए गए थे जब चीन भारत और चीन की सीमा के रूप में मैकमोहन रेखा को स्वीकार करने के लिए अपने शब्दों से पीछे हट गया था। भारत चीन के बीच युद्ध का मुख्य कारण अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों की संप्रभुता को लेकर विवाद था। अक्साई चिन, जिसे भारत लद्दाख का हिस्सा मानता था और चीन शिनजियांग प्रांत का हिस्सा मानता था, यहीं से टकराव शुरू हुआ और यह युद्ध में बदल गया। भारत और चीन के बीच युद्ध 20 अक्टूबर 1962 को शुरू हुआ, जिसके परिणामस्वरूप हजारों सैनिक शहीद हुए और भारत को हार का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में चीन ने भारत के अक्साई चिन में लगभग 38,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। भारत पर आक्रमण कर चीन ने भारतीय राजनीतिक नेताओं का भ्रम तोड़ दिया कि, चीन भारत पर कभी आक्रमण नहीं करेगा। 1962 युद्ध के बाद भारत ने चीन के प्रति अपनी नीति बदली। भारत चीन

युद्ध 1962 के इस युद्ध मे भी जन संचार साधनों के उपयोग को देखा गया । चीन ने अपने विभिन्न संचार साधनों द्वारा विभिन्न भारतीय क्षेत्रों को अपना बताया, वहीं भारत ने भी अपने संचार साधनों से तटस्थ तथा मित्र देशों में अपनी नीति को सत्य तथा शत्रु की नीति को असत्य सिद्ध करने एवं सहायता पाने में कुछ हद तक सफल रहा, और चीन को एकतरफा युद्धविराम करना पड़ा । अन्यथा भारत को अत्यधिक जनधन की हानि हो सकती थी । 1962 के भारत-चीन युद्ध के पश्चात मीडिया ने मुखर होकर तत्कालीन रक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन की असफलता पर इतना प्रहार किया, कि न चाहते हुए भी पंडित जवाहरलाल नेहरू को उन्हें अपने मंत्रिमंडल से अलग करना पड़ा। दोनो देशों की सरकारों ने मीडिया पर महत्वपूर्ण नियंत्रण रखा, और उन सूचनाओं के प्रकाशन को सीमित कर दिया, जिन्हे हितों के लिए हानिकारक माना जा सकता था। यह नियंत्रण सैन्य अभियानों और रणनीतिक निर्णयों के कवरेज तक विस्तारित हुआ।

भारत - पाकिस्तान युद्ध, 1965

दूसरा भारत पाकिस्तान युद्ध 1965 में लड़ा गया । इस बार भी, पाकिस्तान ने युद्ध की शुरुआत की। लगभग 33,000 पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सीमा में प्रवेश किया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान की योजना को निष्प्रभावी करने के लिए संघर्ष विराम रेखा को पार किया। इसके बाद, दोनों देशों के बीच एक गंभीर युद्ध हुआ । युद्ध विराम के लिए ताशकंद में एक भारत पाकिस्तान शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें भारत के प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने बैठक में भाग लिया। बैठक ताशकंद घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुई। यह युद्ध एक गतिरोध के साथ समाप्त हुआ, यानी दोनों देश खुद को विजयी मानते हैं। 1965 के भारत-पाक युद्ध में भी दोनों राष्ट्रों द्वारा विभिन्न जनसंचार माध्यमों का प्रयोग देखने की मिला जिसमें दोनों राष्ट्रों ने एक दूसरे को आक्रामक सिद्ध करने का प्रयास किया । भारत - पाकिस्तान के अखबारों ने युद्ध की खबरों को बड़ी प्रमुखता दी। इनमे से कई अखबार ने युद्ध से संबंधित तस्वीरें और रिपोर्ट्स प्रकाशित की। इस युद्ध की सूचना रेडियो के माध्यम से भी पहुंचाई गई। रेडियो स्टेशन युद्ध की खबरों और संदेशों को प्रसारित करती रही और जनता को युद्ध की स्थिति के बारे में सूचित करती रही।

भारत - पाकिस्तान युद्ध, 1971

1971 में पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान के प्रतिद्वंदिता व संघर्ष के परिणामस्वरूप बांग्लादेश मुक्ति युद्ध शुरू हुआ । यह युद्ध पाकिस्तानी सेना के हाथों बहुत अधिक रक्तपात और मानव अधिकारों के उल्लंघन का गवाह था। इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान की सेना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था। 90,000 पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया। पाकिस्तान द्वारा शिमला समझौते पर हस्ताक्षर करने और आधिकारिक रूप से भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के साथ युद्ध समाप्त हो किया। भारत-पाक युद्ध 1971 में जन संचार साधनों ने महती भूमिका निभाई। इस युद्ध में भारत न केवल शानदार ढंग से विजई हुआ वरन संचार साधनों के माध्यम से प्रचार एवं तत्कालीन युद्ध संबंधी सूचनाओं पर आधारित बातें प्रसारित करके 90000 से भी अधिक पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण कराने में सफल रहा।मीडिया ने एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम किया, जिसका उपयोग बांग्लादेश के मुद्दे के समर्थन और विरोध दोनों में किया गया। मीडिया और पत्रकारिता पर अपने ब्लॉग में जमील खान ने कहा कि जब बांग्लादेश की स्थापना हुई थी, उस समय वहां कई समाचार पत्र और पत्रिकाएं थीं। मुक्ति संग्राम के दौरान, बांग्लादेश में समाचार पत्र व्यवसाय को एक बड़ा झटका लगा जब पाकिस्तानी सेना ने जानबूझकर तीन प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों: दैनिक इत्तेफाक, द पीपल और संगबाद के कार्यालयों और मुद्रण सुविधाओं को नष्ट कर दिया। तीनों प्रकाशन ढाका में आधारित थे। हालाँकि, मीडिया व्यवसाय में वृद्धि देखी गई और बांग्लादेश के राष्ट्रवाद के समर्थन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे पाकिस्तानी कब्जे को सफलतापूर्वक हटाया गया। हालाँकि पाकिस्तानी सरकार ने प्रेस

पर भारी सेंसरशिप लगा दी, लेकिन मुक्ति संग्राम के दौरान अत्याचारों की जानकारी तेजी से और व्यापक रूप से विश्व स्तर पर फैल गई। बांग्लादेश की स्वतंत्रता की खोज को प्रेरित करने में विश्व समुदाय का समर्थन निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण था, और इसे प्राप्त करने योग्य बनाने में मीडिया का योगदान महत्वपूर्ण थी।

कारगिल युद्ध, 1999

पाकिस्तान के साथ एक अन्य युद्ध 1999 में कारगिल में शुरू हुआ। कारगिल युद्ध का प्रमुख कारण पाकिस्तानी सेना द्वारा भारत के आगे के जमीन पर कब्जा करना था। इसके चलते भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय शुरू किया, जबकि पाकिस्तानी सेना ने ऑपरेशन बद्र को लॉन्च किया। इसके अतिरिक्त, भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन सफेद सागर का शुभारंभ किया। इस युद्ध में भारतीय वायु सेना द्वारा मिराज 2000 विमानों को शामिल करना भी देखा गया। भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान की सेनाओं के तैनाती पर भारी बमबारी की, और उनके आपूर्ति मार्ग एवं बंकरों को नष्ट कर दिया। लंबी लड़ाई के बाद, प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने 11 जुलाई 1999 को कारगिल युद्ध में भारत को विजयी घोषित किया । 1999 में कारगिल की लड़ाई की सारी खबरें एवं लड़ाई के आंखों देखे दृश्य टेलीविजन पर सीधे प्रसारित हुआ था। भारत द्वारा लड़े जा रहे युद्ध का सीधा प्रसारण पहली बार दुनिया ने देखा। वास्तव में, यह दक्षिण एशियाई क्षेत्र का पहला 'लाइव' युद्ध था। कारगिल युद्ध भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तानी घुसपैठियों के साथ लड़ा गया था। युद्ध ऐसे समय में हुआ जब भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शुरुआत हुई थी। इसने युद्ध को पूरे देश में सीधा प्रसारण करने में सक्षम बनाया । साथ ही, भारतीय मीडिया द्वारा बनाई गई सकारात्मक छवि ने देश को जबरदस्त कूटनीतिक पहचान दिलाने में मदद की। ऐसा कहा जाता है कि यह पूरी तरह से खुला कवरेज नहीं था, खूनी मुठभेड़ों और नश्वर लड़ाइयों का कोई ग्राफिक विवरण नहीं दिखाया गया था। लेकिन, टाइगर हिल बंकरों ने भारतीय टीवी को युद्ध के कुछ बेहतरीन फुटेज दिए। लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी (उस समय भारतीय सेना के जनरल) द्वारा लिखित ''कारगिलः टर्निंग द टाइड'' नामक पुस्तक में कारगिल युद्ध में बरखा दत्त की रिपोर्टिंग के बारे में बात की गई थी। कई मीडिया घरानों ने तथ्य, आंकड़े, आधिकारिक बयान और शिक्षाप्रद संपादकीय प्रदान किए। उन्होंने युद्ध के मानवीय पक्ष को भी कवर किया और एक भावनात्मक संबंध बनाया।

निष्कर्ष

मीडिया ने स्वतंत्रता के बाद भारत - पाकिस्तान व भारत - चीन के मध्य हुए युद्धों की सूचनाएं सरकार और आम जन तक पहुंचाने का चुनौतीपूर्ण कार्य बेहद सहजता से किया । सरकार की छवि को आमजन मानस में सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया । मीडिया ने सैनिकों के शौर्य,वीरता व बलिदान को सराहा और उनके मनोबल व आत्मविश्वास को बढ़ाया जो उनके लिए संजीवनी की तरह काम की और भारत को सफलता प्राप्त हुई, वैश्विक स्तर पर भारत की सकारात्मक छवि उभरी। हालांकि प्रारंभिक युद्धों की सूचनाओं के प्रसारण में प्रिंट मीडिया और रेडियो ही संचार के प्रमुख साधन रहे लेकिन कारगिल युद्ध के समय इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका सशक्त रही और इस युद्ध का लाइव प्रसारण हुआ, युद्ध की प्रत्येक घटना को लोगों ने आंखों देखा। मीडिया द्वारा सरकार को सही और त्वरित सूचना मिलने से अपनी रणनीतिक तैयारी करने और युद्ध को जीतने में मदद मिली। निश्चित तौर पर इन भारतीय युद्धों के परिणाम पर मीडिया की प्रभाविता रही है। वर्तमान स्थिति के अन्तर्गत जनसंचार के माध्यम से समाचार जनता की राय, राज्य की नीतियों, सेना के मनोबल और रोजमर्रा की जिंदगी को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजनीतिक विशेषज्ञ अधिकतर प्रेस को अपने पक्ष में निर्देशित करने के लिए उसे नियंत्रित करते हैं। हालाँकि, स्वतंत्र मीडिया सत्य को संप्रेषित करने, संघर्ष की जटिलताओं को खोलने और उपेक्षित

आवाजों को सुनने के लिए मौजूद है। प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से डिजिटल मीडिया के विकास ने मीडिया संचालन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। आधुनिक समय के अंत में, आतंकवादी संगठनों ने वैश्विक दर्शकों को प्रभावित करने के लिए सोशल मीडिया सहित डिजिटल मीडिया का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया है। मीडिया युद्ध और शांति दोनों उद्देश्यों को पूरा करता है। युद्ध पत्रकारिता का लक्ष्य संघर्ष शुरू करना और उसे कायम रखना है, जबकि शांति पत्रकारिता सच्चे और शिक्षाप्रद मीडिया के माध्यम से सकारात्मक बदलाव लाने पर केंद्रित है। अफसोस की बात है कि हमारे समय में शांति पत्रकारिता की तुलना में युद्ध पत्रकारिता अधिक उत्पादक व प्रभावी हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- अम्बिका प्रसाद वाजपेयी (1986), समाचारपत्रों का इतिहास, ज्ञानमण्डल, वाराणसी।

2- हिरण्यमय कार्लेकर (2002), 'द मीडिया: इवोल्यूशन, रोल ऐंड रिस्पांसिबिलिटी'।

3- एन.एन. वोहरा और सव्यसाची भट्टाचार्य (सम्पा.), लुकिंग बैक: इण्डिया इन ट्वेंटियथ सेंचुरी, एनबीटी और आईआईसी, नई दिल्ली।

4- मोहित मोइत्रा (1993), अ हिस्ट्री ऑफ जर्नलिजम, नैशनल बुक एजेंसी, कोलकाता।

5- आर. पार्थसारथी (1989), जर्नलिजम इन इण्डिया: फ्रॉम द अर्लिएस्ट टाइम्स टु प्रजेंट डे, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली.

6- एस.पी. शर्मा (1996), द प्रेस: सोसियो-पॉलिटिकल अवेकनिंग, मोहित पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

7- के. सियुनी (1992), डब्ल्यू. ट्रुएट्शलर और द युरोमीडिया रिसर्च ग्रुप, डायनामिक्स ऑफ मीडिया पॉलिटिक्स, सेज पब्लिकेशंस, लंदन.

8- पी.सी. चटर्जी (1987), ब्रॉडकास्टिंग इन इण्डिया, सेज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

9- के. बालासुब्रह्मण्यम (1999), द इम्पेक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑफ मीडिया ऑन मीडिया इमेजिज: अ स्टडी ऑफ मीडिया इमेजिज बिटवीन 1987-1997, अप्रकाशित थीसिस, ओहाइयो स्टेट युनिवर्सिटी, कोलम्बस.

10- यू.वी. रेड्डी (1995), 'रिप वान विंकल: अ स्टोरी ऑफ इण्डिया टेलिविजन', डी. फ्रेंच और एम. रिचर्ड्स (सम्पा.), कंटम्परेरी टेलिविजन: ईस्टर्न पर्सपेक्टिव्ज, सेज, नई दिल्ली,

11- पी.सी. चटर्जी (1987), ब्रॉडकास्टिंग इन इण्डिया, सेज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

12- श्रीवास्तव, डॉ. अभय कुमार, (2013) युद्ध और शांति काल में मीडिया की भूमिका, प्रत्यूष पाबलिकेशंस, दिल्ली.

13- पालित,मेजर जनरल डी.के. तूफानी युद्ध (भारत - पाक संघर्ष, 1971), नई दिल्ली.

14- झारी, डॉ. कृष्णदेव, कश्मीर समस्या और भारत - पाक युद्ध,नई दिल्ली.